3वर्ष

अंक - 13

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

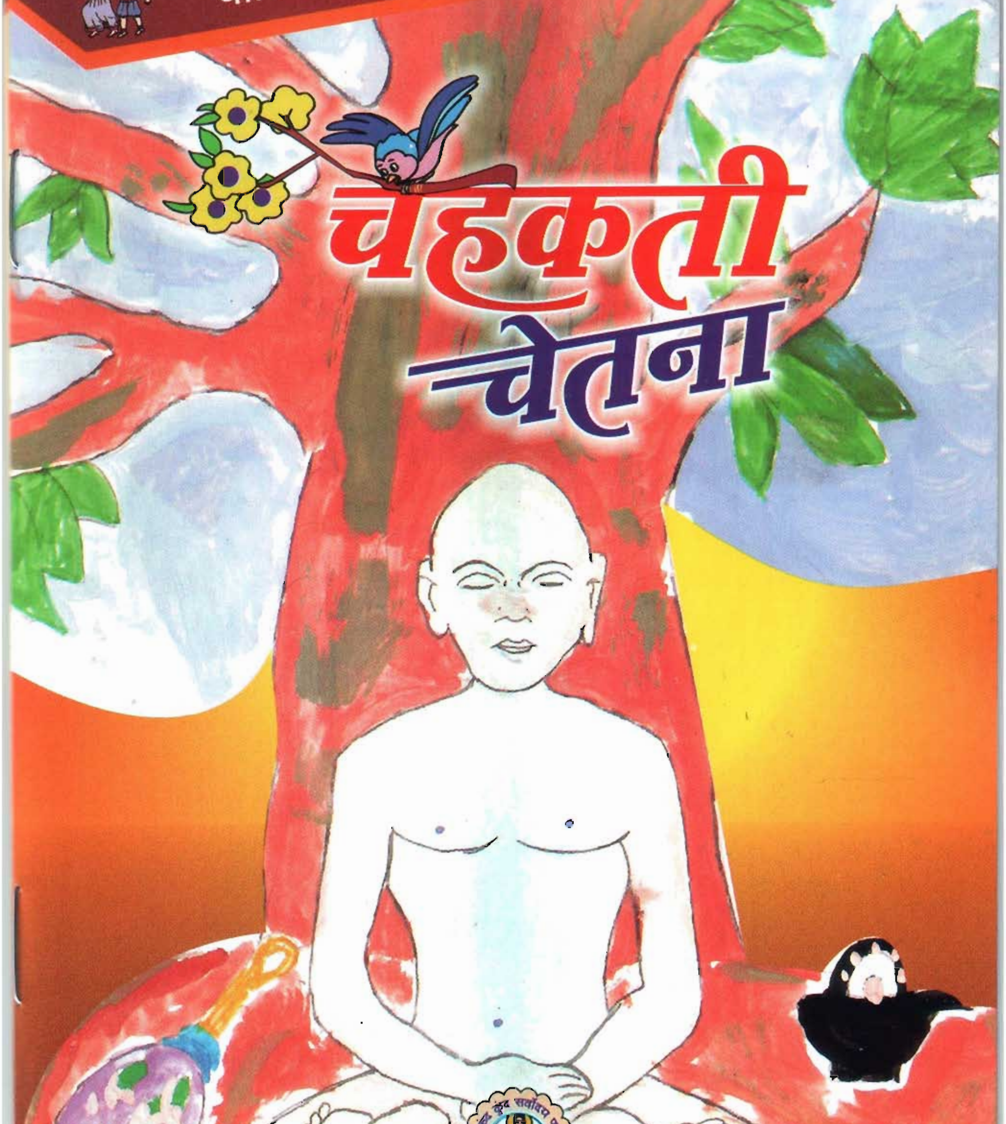

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलख राय सेठ, स्मृति पृष्ठ, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

चिड़िया सुन ले

रचनाकार - विराग शास्त्री देवलाली

चिड़िया सुन ले कुट-कुट-कुट।
तू भी खा ले ये बिस्कुट।
भूख लगी है खा ले तू।
खाकर फिर उड़ जाना तू।
बिस्कुट मैं ना खाती हूँ।
दाना पानी लेती हूँ।
बिस्कुट हैं बाजार के।
घर में बनाओ प्यार से।
बड़े प्यार से खाऊँगी।
वरना भूखी रह जाऊँगी।।

जैनी बच्चे

हम जैनी बच्चे हैं सच्चे ।
सत्य मार्ग पर आगे बढ़ते।
पंच प्रभु हैं ईश हमारे।
उनको सौ सौ नमन हमारे।
पाप से दूर ही रहते हैं।
अच्छी बातें करते हैं।।

हमारे तीर्थ क्षेत्र

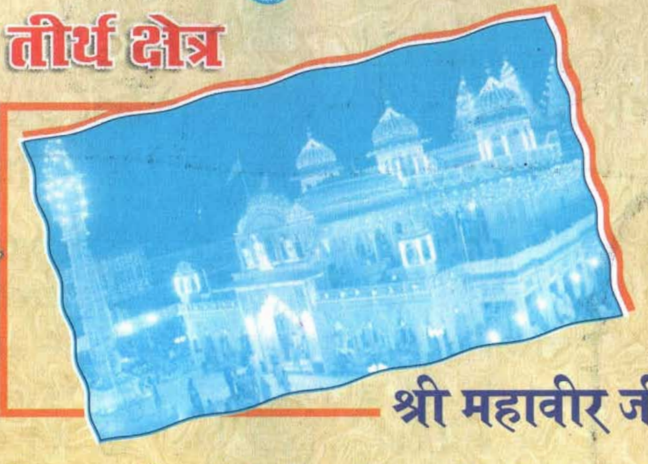

श्री महावीर जी

श्री दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र श्री महावीरजी राजस्थान करौली जिला की हिन्डोन तहसील में स्थित है। यह जयपुर से 140 किमी की दूरी पर स्थित है। यहाँ रेल्वे स्टेशन भी है। इस क्षेत्र का निर्माण लगभग 400 वर्ष पूर्व हुआ था। यहाँ मूल नायक श्री महावीर स्वामी हैं। यहाँ स्थापित यह प्रतिमा 400 पूर्व जमीन की खुदाई में प्राप्त हुई थी। इसके बारे में एक कथा प्रसिद्ध है कि यहाँ एक ग्वाले की गाय ने सुबह शाम दूध देना बंद कर दिया। ग्वाले को कुछ शंका हुई कि यह गाय तो प्रतिदिन दूध देती थी फिर इसे अचानक इसे क्या हो गया ? वह ग्वाला गाय के पीछे–पीछे गया तो पता करने पर मालूम हुआ कि यह गाय प्रतिदिन एक टीले के ऊपर जाकर अपना दूध गिरा देती थी। ग्वाला ने इसे चमत्कार जानकर उस टीले की खुदाई की तो वहाँ पर भगवान महावीर स्वामी की सुन्दर प्रतिमा निकली। पास के गांव में स्थापित करने के लिये जब इस प्रतिमा को बैलगाड़ी में रखा तो बैलगाड़ी एक कदम भी आगे नहीं बढ़ी। यह अतिशय जानकर बसवा निवासी श्री अमरचंदजी बिलाला ने यहीं पर एक मंदिर बनवाया। यहाँ पांच अन्य मनोज्ञ मंदिर हैं।

यहाँ से महुआजी 50 कि.मी., पदमपुरा 175 किमी, तिजाराजी 205 किमी, मथुरा 145 किमी, आगरा 170 कि.मी. की दूरी पर हैं।

वे कौन थे ?

1. वे कौन थे जिन्हें भस्म व्याधिरोग हुआ था ?
आचार्य समन्तभद्र ।

2. वे कौन थे जिनका उपसर्ग राम लक्ष्मण ने दूर किया ?
कुलभूषण–देशभूषण ।

3. वे कौन थे जो इस युग में सर्वप्रथम मोक्ष गये ?
अनन्तवीर्यजी ।

4. वे कौन थे जिन्होंने हाथी पर बैठे–बैठे केश लोंच किया था ?
राजा मधु ।

5. वे कौन थे जिन्होंने अपने पैर के नीचे की धूल उठाकर पहाड़ पर फेंकी तो पहाड़ सोने का हो गया था ?
शुभचन्द्र आचार्य ।

6. वे कौन थे जिनके सांस लेने से शिला हिलती थी ?
प्रद्युम्न कुमार ।

7. वे कौन थे जिन्होंने दीक्षा के बाद आहार नहीं लिया ?
मुनिराज बाहुबली ।

8. वे कौन थे जिनके हाथों से श्रीकृष्ण की मृत्यु हुई ?
जरत कुमार ।

9. वे कौन थे जिन्होंने सीता की अग्नि परीक्षा में उनकी रक्षा की थी ?
मेघकेतु देव ।

10. वे कौन थे जिन्होंने पुत्र जन्म का समाचार सुनकर मुनिदीक्षा ले ली थी ?
सुरेन्द्रदत्त सेठ ।

संकलन–पंकज जैन, देवलाली

सच्चा उपहार

आज मुक्ति का जन्म दिन था। सुबह से ही घर में चहल–पहल थी। मुक्ति ने अपने बहुत सारे दोस्तों को घर पर बुलाया था। मम्मी सुबह से नाश्ता तैयार करने में लगीं थीं। मुक्ति ने आज सुबह से जिनमंदिर जाकर दर्शन–पूजन कर लिये थे। आज रविवार होने से स्कूल जाने की चिन्ता नहीं थी। पापा भी आज घर पर ही थे। इसलिये पापा ने मुक्ति के जन्मदिन पर दोपहर में पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन किया था। मुक्ति ने आज के दिन विशेष रूप से रात्रि में कुछ भी न खाने–पीने का नियम लिया था और बाजार की कोई भी वस्तु न खाने का संकल्प लिया था। आलू–प्याज जैसे जमीकंद तो बचपन से नहीं खाती थी।

दोपहर में आनंदपूर्वक विधान का आयोजन हुआ और ४ बजे से पार्टी का कार्यकम था। मुक्ति के सारे दोस्त आये थे। अधिकांश दोस्त संपन्न परिवार के थे। वे सब मुक्ति के लिये मंहगे गिफ्ट लेकर आये थे। मुक्ति की खास सहेली लब्धि के पापा की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि अपनी प्यारी सहेली को क्या गिफ्ट दूं ? क्योंकि बाजार के मंहगे गिफ्ट खरीदने के लिये उसके पास रुपये ही नहीं थे। आखिर बहुत सोचकर उसने एक उपहार मुक्ति को देने के लिये रंगीन पेपर में तैयार कर लिया।

शाम को मुक्ति के घर पर सारे दोस्त मिलकर मस्ती कर रहे थे। मुक्ति की मम्मी ने घर में तैयार किया हुआ केक लाकर रखा और सारे मेहमानों को खिलाया। पाठशाला की दीदी ने जन्मजन्मदिन के कार्यकम में विशेष रूप से पाठशाला में की दीदी भी आईं थीं। दीदी ने जन्मदिवस को सादगी से मनाने का संदेश दिया।

सभी दोस्तों ने मुक्ति का उपहार दिये। कोई गिफ्ट पैक करके लाया था तो कोई ऐसे ही दे रहा था। कोई जापानी गुड़िया दे रहा था तो कोई रिमोट से चलने वाली कार। एक सहेली ने सुन्दरसी डायरी दी तो दूसरी सहेली ने कलर सेट ।

लब्धि यह सब देखकर चुपचाप खड़ी हो गई। उसे लगा इन मंहगे—मंहगे उपहार के सामने मेरी छोटे से उपहार की क्या कीमत ? यदि मैं इसे दूँगी तो सब मेरी हंसी उड़ायेंगे। वह एक कोने में खड़ी चुपचाप सब देख रही थी तो विनय ने पूछा – क्या बात है लब्धि ? वहाँ क्यों खड़ी हो हाथ में गिफ्ट लेकर ? मुक्ति को गिफ्ट नहीं दोगी क्या ? मुक्ति झिझकते हुये बोली हाँ—हाँ क्यों नही?

मुक्ति ने लब्धि को देखकर कहा कि आओ आओ लब्धि ! मेरे पास आओ । सबसे बड़ा और मंहगा गिफ्ट लाई है – विनय ने मजाक करते हुये कहा। विनय किसी का अपमान नहीं करते – मुक्ति ने विनय को समझाते हुये कहा। मेरी लब्धि मेरे लिये जरुर कुछ खास उपहार लाई होगी। विनय ने फिर कहा – हाँ हाँ इसमें तो डायमंड का हार होगा। मुक्ति ने आंख दिखाते हुये विनय को चुप रहने के लिये कहा और लब्धि को पास बुलाया। लब्धि ने डरते—डरते वह गिफ्ट दे दिया। मुक्ति ने उसे सबके सामने खोला तो उसमें धार्मिक बाल गीतों की तीन वीडियो सी.डी. हम होंगे ज्ञानवान, जिनधर्म की कहानियाँ और तोता तू क्यों रोता थीं।

मुक्ति ने गर्व से कहा– लब्धि का यह गिफ्ट सबसे ज्यादा कीमती है। यह तो अमूल्य वस्तु है। वास्तव में यही सच्चा उपहार है। सबने तालियाँ बजाकर लब्धि का सम्मान किया और उसके बाद सबने ३ घंटे तक प्यारे—प्यारे धार्मिक बाल गीतों वाले इन वीडियो सी.डी. को देखा और आंनदपूर्वक जन्मदिन मनाया। लब्धि यह देखकर बहुत खुश थी।

**हर जन्म अपने में मौत लिये बैठा है,हर मानव अपने जीवन में पाप लिये बैठा है,
इस यौवन को पाकर मत इतराओ इतना,यह यौवन भी बुढ़ापे को पैगाम लिये बैठा है ॥**

प्रेरक प्रसंग

लगभग 35 वर्ष पूर्व की बात हैं। कर्नाटक का प्रसि' हेगड़े परिवार आचार्य विद्यानन्दजी के दर्शन के लिये आया। कर्नाटक की जनता पार्टी के नेता के.के. हेगड़े परिवार का परिवार ब्राह्मण है और जैन तीर्थ धर्मस्थल का हेगड़े परिवार जैन धर्म का अनुयायी है। आचार्य विद्यानन्दजी ने के.के.हेगड़े से पूछा कि आप दोनों हेगड़े हैं फिर आप ब्राह्मण हैं और वे जैन - ये कैसे ? तब श्रीमति के.के.हेगड़े ने बताया कि सौ वर्ष पूर्व हमारा परिवार भी जैन धर्म का अनुयायी था। उस समय हमारे परिवार के एक व्यक्ति ने शिकार किया जिसके कारण जैन समाज ने उसे समाज से बाहर कर दिया। हमारा परिवार बहुत प्रतिष्ठित परिवार था। हमारा परिवार और हमारे साथ 10 हजार अन्य व्यक्ति जैन धर्म त्यागकर ब्राह्मण बन गये। लेकिन हम आज भी जिस दिन हम ब्राह्मण बने थे उस दिन प्रत्येक वर्ष जैन मन्दिर जाते हैं और जैन परम्परा का निर्वाह करते हैं। वह दिन हमें याद दिलाता है कि हम भी कभी जैन थे।

भाग्य

एक धनी आदमी ने सोने की खदान का एक पहाड़ खरीदा और सोने को निकालने के लिये पूरा पहाड़ खुदवा दिया लेकिन उसे कुछ नहीं मिला। वह सोचने लगा कि लोगों ने थोड़ी सी भूमि में कई किलो सोना प्राप्त किया है। मैंने इतना बड़ा पहाड़ खरीदा और मुझे कुछ नहीं मिला। ऐसी बेकार जमीन को बेच देना चाहिये, लेकिन बिना सोने वाली जमीन को कौन खरीदेगा ? लेकिन एक व्यक्ति उसे आधी कीमत पर खरीदने तैयार हो गया। धनी आदमी ने सोचा कि कोई इस मूर्ख व्यक्ति को बहका न दे इसलिये उसने दो दिन में जमीन की आधी कीमत लेकर उसकी रजिस्ट्री करवा दी और खुश होने लगा कि अच्छा हुआ जितना मिला उतना सही।

जिस व्यक्ति ने इस जमीन को खरीदा था उसने जमीन को खोदना प्रारंभ कर दिया। एक फुट और खोदा होगा कि उसे सोने की चट्टान दिखाई देने लगीं।

इसका नाम है - समय से पहले और भाग्य से अधिक किसी को कुछ नहीं मिलता।

01- एक काल में 12 चक्रवर्ती होते है।

02- चक्रवर्ती की आयुधशाला में चक्ररत्न प्रगट होता है।

03- चक्रवर्ती छःखण्ड की विजय के पश्चात् वृषभगिरि पर्वत अपना नाम लिखते हैं।

04- चक्रवर्ती के हजारों वर्ष के युद्ध में किसी प्रकार का रक्तपात नहीं होता।

05- चक्रवर्ती का वज्रवृषभनाराच संहनन और समचतुरस्र संस्थान होता है।

06- चक्रवर्ती की 96 हजार रानियाँ होती हैं।

07- चक्रवर्ती के 32 हजार देव रक्षा करते हैं।

08- चक्रवर्ती के 360 चिकित्सक, 360 अंगरक्षक, 360 रसोईये होते हैं।

09- चक्रवर्ती के साढ़े तीन करोड़ बन्धुवर्ग (रिश्तेदार) होते हैं।

10- चक्रवर्ती के **88** हजार म्लेच्छ राजा चक्रवर्ती के आधीन होते हैं।

11- चक्रवर्ती को 32 हजार मुकुटबद्ध राजा प्रणाम करते हैं।

12- चक्रवर्ती को कई किलोमीटर दूर की आवाज भी स्पष्ट सुनने की ताकत होती है।

13- चक्रवर्ती प्रतिदिन सूर्य में देखकर अकृत्रिम जिनबिम्बों के दर्शन करता है।

जिनवचन की अटल आस्था

कविवर धनंजय सेठ संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड पण्डित, सिद्धान्त मर्मज्ञ और श्रेष्ठ कवि थे। वे जिनेन्द्र भगवान की भक्ति इतनी तन्मयता से करते थे कि भक्ति के समय वे बाहर के जगत को भूल जाया करते थे।

एक दिन जिनेन्द्र पूजा में आप तल्लीन थे, उसी समय उनके घर पर उनके बच्चे को सर्प ने काट लिया। बच्चे के मुंह से सफेद झाग निकलने लगा। सेठानी ने तुरन्त घर के अनेक इलाज किये और डॉक्टर को बुला लिया परन्तु उससे कुछ लाभ नहीं हुआ। तब जिनमंदिर में सेठ जी को खबर दी गई, किन्तु सेठ धनंजय पूजा में इतने तल्लीन थे कि उन्होंने इस बात पर कुछ ध्यान दिया।

यह देखकर एक पड़ोसी ने सेठानी को कहा कि आपके भगत सेठजी कोई चिन्ता नहीं करने वाले हैं। उन्हें तो भगवान की भक्ति के आगे अपने पुत्र का संकट भी नहीं दिख रहा है। बच्चे को ले जाकर उन्हीं के सामने रख आओ। तब बच्चे की हालत देखकर अपने आप चिन्ता करेंगे। यह सुनकर सेठानीजी ने बच्चे को उठाया और मन्दिर में ले जाकर सेठजी के सामने रख दिया और जोर–जोर से रोने लगी।

सेठ धनजंय ने पूजा करने के बाद समझाया – सेठानीजी! इतनी चिन्ता क्यों करती हो ? यदि बच्चे की आयु शेष है तो कोई उसे छीन नहीं सकता और यदि आयु समाप्त हो गई तो उसे कोई बचा नही सकता। किन्तु सेठानीजी पर इन बातों का कोई असर नहीं पड़ा। वे उसी तरह रोती चिल्लाती रहीं। बालक के मुंह से झाग निकलता जा रहा था। सेठजी ने पूजन के बाद स्तुति करते हुये एक स्तोत्र की रचना की और पुत्र वियोग का दुःख कम करने के लिये उस स्तोत्र को पढ़ना प्रारंभ कर दिया।

और कुछ देर बाद चमत्कार हो गया, बालक के आयुकर्म के उदय और सेठजी के पुण्य उदय से बच्चे का जहर अपने आप उतर गया और धर्म प्रभावना हुई। आज भी वह स्तोत्र विषापहार स्तोत्र के नाम से प्रसिद्ध है।

संकलन – स्वेता जैन, इंदौर

इनके मल-मूत्र नहीं होता

त्रेसठ शलाका पुरुष अर्थात् २४ तीर्थंकर
१२ चक्रवर्ती, ९ नारायण, ९ प्रतिनारायण
९ बलभद्र, २४ तीर्थंकरों की माता,
२४ तीर्थंकरों के पिता - इन्हें मिलाकर
१११ महापुरुष कर्म भूमि के और पूर्ण
भोग भूमि के पुरुषों को मल-मूत्र और
दाढ़ी-मूंछ नहीं होती।

पत्ता गोभी खाने से क्या हुआ

पत्ता गोभी की करामात

जिनवाणी के चरणानुयोग के अनुसार पत्ता गोभी और फूल गोभी दोनों अभक्ष्य है। फूल गोभी में अनंत एकेन्द्रिय जीव तो होते ही हैं साथ त्रस जीव पाये जाते हैं। इन्हें नहीं खाना चाहिये। वह तो पाप का कारण है ही स्वास्थ्य के लिये भी घातक हो सकता है।

जबलपुर के दिगम्बर जैन मंदिर में प्रकाश नाम का माली काम करता है। विगत दो वर्ष पूर्व उसने अपने परिवार के साथ पत्ता गोभी खाई। पत्ता गोभी खाने के लगभग 6 घंटे बाद उसे अजीबसा अनुभव होने लगा। और पूरे शरीर में जगह-जगह दर्द का अनुभव होने लगा। पहले तो उसने सामान्य दवाई लेकर काम चलाया परन्तु जब आराम नहीं मिला तो जबलपुर के किसी डॉक्टर को दिखाया। तो डॉक्टर ने सामान्य रोग समझकर दवा दे दी। उसे खाने के बाद भी आराम नहीं हुआ और दर्द बढ़ता गया। उसे कभी पैर में, कभी हाथ में, कभी सिर में दर्द होने लगा। तब समाज की सहायता से उसे नागपुर में विशेषज्ञ डॉक्टर ने जाँच करके बताया कि प्रकाश के शरीर में एक कीड़ा चला गया है। यह कीड़ा पत्ता गोभी में होता है और किसी भी प्रकार से मरता नहीं है, उसे चाहे पानी में उबाला जाये तो भी यह नहीं मरता। यह कीड़ा दिमाग में पहुँच जाता है और सही इलाज न होने पर मौत भी हो सकती है। प्रकाश को विभिन्न प्रकार की दवाईयों दी गईं और दवाईयों के माध्यम से उस कीड़े का मलद्वार से बाहर निकाला गया।

यदि आप गोभी खाते हैं तो सावधान...........।

गौतम स्वामी

1. गौतम स्वामी महावीर स्वामी के समवशरण में मुख्य गणधर थे।
2. गौतम स्वामी का जन्म गोर्बर में ईसा से 607 वर्ष पूर्व हुआ था।
3. गौतम स्वामी के माता का नाम पृथ्वी देवी और पिता का नाम वसुभूति था।
4. गौतम स्वामी की जाति ब्राह्मण और गोत्र गौतम था।
5. गौतम स्वामी का दूसरा नाम इन्द्रभूति गौतम था।
6. गौतम स्वामी मान के कारण भगवान महावीर के समवशरण में भगवान महावीर से कुछ सिद्धांतों पर वाद विवाद करने गये थे और मानस्तंभ को देखकर उनका मान समाप्त हो गया और वे अपने 500 शिष्यों के साथ दिगम्बर मुनि बन गये।
7. गौतम स्वामी ने मुनि दीक्षा लेकर सर्वप्रथम जैनं जयतु शासनम् का उद्‌घोष किया।

   गौतम स्वामी ने 50 वर्ष की आयु में गणधर बन गये और 30 वर्ष तक गणधर पद पर रहे।
8. जिस दिन महावीर स्वामी को मोक्ष प्राप्त हुआ उसी दिन गौतम स्वामी को केवलज्ञान हुआ।
9. गौतम स्वामी ने केवलज्ञान पाने के 12 वर्ष बाद तक विहार किया और ईसा से 515 वर्ष पूर्व 92 वर्ष की आयु में गुणावा से मोक्ष प्राप्त किया।
10. गौतम स्वामी के तुरंत बाद सुधर्म स्वामी को केवलज्ञान हुआ।

संकलन - विशंक जैन, देवलाली

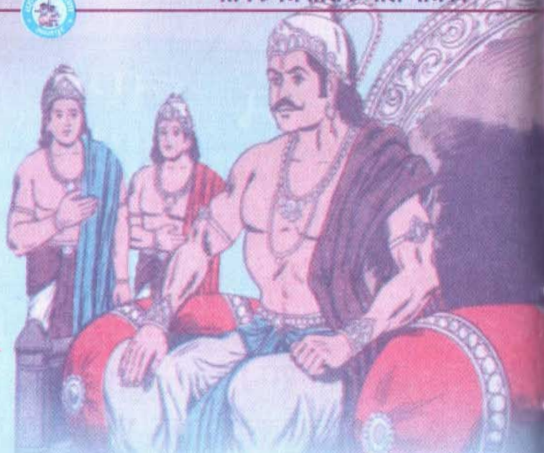

सच्चा सौन्दर्य

सनतकुमार चक्रवर्ती अपने रूप सौन्दर्य के लिये विश्व विख्यात थे। उनके रूप सौन्दर्य की प्रशंसा इन्द्र ने भी की तो एक देव ने सुनकर कहा - हे देवेन्द्र! आप उन मनुष्यों की प्रशंसा कर रहे हैं, जिनका शरीर मल, मूत्र, पसीना आदि गंदी धातुओं से भरा हुआ है। आप किसी देव की प्रशंसा करते तो समझ में आता लेकिन सनतकुमार की प्रशंसा मेरी समझ में नहीं आ रही है। तब सौधर्म ने कहा - जो वस्तु जैसी है उसका वैसा वर्णन करना ही ठीक है। सनत कुमार जैसा रूप तो इस समय देव और इन्द्रों में भी नहीं है और मेरी बातों से क्या ?आप स्वयं जायें और देखकर निर्णय करें।

तब सनतकुमार के रूप को देखने के लिये एक देव मध्यलोक के लिये चल पड़ा। उस समय सनतकुमार चक्रवर्ती अखाड़े में लंगोट कसे हुये धूल-मिट्टी से भरे व्यायाम कर रहे थे। किन्तु में धूल में सनतकुमार चक्रवर्ती हीरे की भांति चमक रहे थे। देव सनतकुमार का यह रूप देखकर उनकी प्रशंसा करने लगा।

अपने रूप की प्रशंसा सुनकर सनतकुमार को अपने शरीर पर बहुत गर्व हुआ और देव से बोला - अरे भाई! यह तो कुछ भी नहीं राजसभा में आना।

राजसभा में आकर देव ने चक्रवर्ती के रूप को देखा तो कुछ उदास सा हो गया। चक्रवर्ती ने पूछा कि देवराज! आप क्यों उदास दिख रहे हैं। अखाड़े में तो बड़े प्रसन्न हो रहे थे। तब देव ने कहा – हे नरश्रेष्ठ! मैं क्या कहूँ ? आपके रूप में बहुत परिवर्तन हो गया है। प्रातः जो सौन्दर्य था वह अब कुछ कम हो गया है। तब सभा के एक सदस्य ने कहा – यह तो चक्रवर्ती का अपमान है। तब देव ने पानी से भरे घड़ा मंगाया। वह घड़ा पानी से ऊपर तक भरा हुआ था। फिर सबसे पूछा कि ये घड़ा पूरा भरा है कि नहीं। सभी ने एक स्वर से कहा – हाँ। हाँ। फिर उसने सबसे छुपाकर एक बूंद पानी निकालकर नीचे जमीन पर डाल दिया फिर सबसे पूछा – " क्या ये घड़ा पहले जैसा ही भरा है ? सबने फिर कहा – हाँ हाँ पहले जैसा ही भरा हुआ है। किन्तु चक्रवर्ती ने कुछ विचार कर कहा – नहीं। पानी पहले से कुछ कम हो गया है। मनुष्य की आयु इसी तरह प्रतिक्षण व्यर्थ में जा रही है और उसका शरीर ढ़ल रहा है किन्तु बूंद की तरह समझ में नहीं आ रहा। सच्चा सौन्दर्य तो अपनी आत्मा में है।

और इस घटना से चक्रवर्ती को वैराग्य हो गया और दिगम्बर मुनि दीक्षा ग्रहण करने वन की ओर चल पड़े।

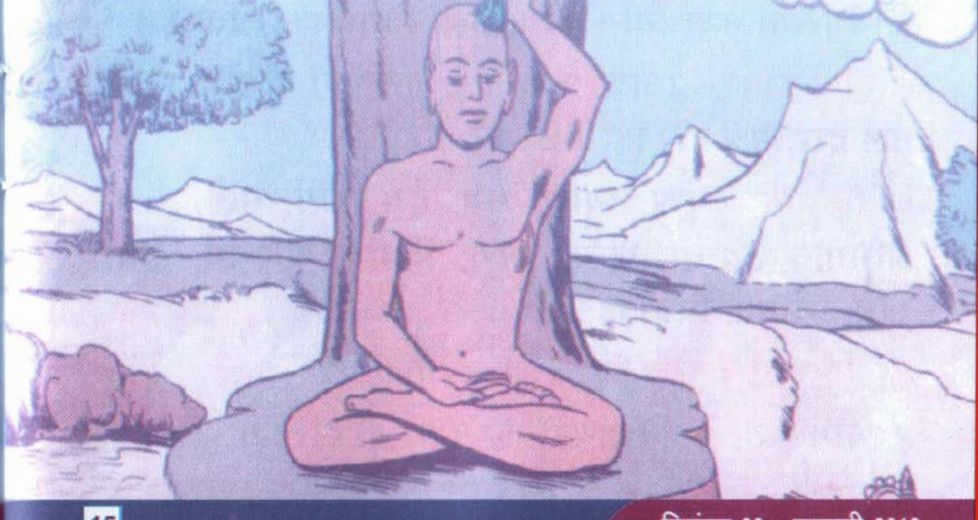

इन्हें भी जानिये

1. नवधा भक्ति - पड़गाहना, उच्च स्थान पर विराजमान करना, पैर धुलाना, पूजा करना, प्रणाम करना, मन शुद्धि,वचन शुद्धि और आहार जल शुद्धि – इन नव प्रकार की भक्तिपूर्वक मुनिराज को आहार दिया जाता है।

2. भोग और उपभोग - जो पदार्थ एक बार भोगा जाये वह भोग और जो बार–बार भोगने में आये वह उपभोग कहलाता है। भोग जैसे – केला आदि। उपभोग – पंखा, टी.वी. आदि।

3. यम - नियम - जीवन पर्यन्त के लिये त्याग का नियम लिया जाये उसे यम कहते हैं अथवा सीमित अवधि के लिये लिया गया त्याग की प्रतिज्ञा नियम कहलाता है।

4. नौ मल द्वार - 2 नेत्र, 2 कान, 2 नासिका के छेद, मुख, मल द्वार, मूत्र द्वार।

5. 18 दोष - भूख, प्यास, भय, द्वेष, राग, मोह, रोग, अभिमान, चिन्ता, जन्म, मरण, विषाद, आश्चर्य, रति, खेद, पसीना, निद्रा।

6. इस जगत में मुख्य वंश थे - 1. ईक्ष्वाकु वंश

2. सोम वंश 3. विद्याधरों का वंश 4. हरिवंश

टूथपेस्ट खाना खतरनाक

क्या आपके बच्चे सुबह पेस्ट करते समय पेस्ट खाते हैं ? तो सावधान वैज्ञानिकों ने अभी शोध के आधार पर दावा किया है कि टूथपेस्ट में मौजूद फ्लोराइड मौत का कारण हो सकता है। इससे सबसे अधिक खतरा बच्चों को है। बच्चे ब्रश करते समय कई बार पेस्ट खा लेते हैं। शोध के अनुसार टूथपेस्ट में पाया जाना वाला फ्लोराइड विषैला होता है। यह सीसा (लीड) से अधिक खतरनाक होता है।

पूरी दुनिया में किसी भी खाद्य या पेय वस्तु में फ्लोराइड के उपयोग सीमा 4 पी पी एम (मात्रा प्रति दस लाख) है जबकि सीसा के लिये यह सीमा 0.015 तय की गई है। फ्लोराइड पानी में पाया ही जाता है, उसे दांतो के रोगों को रोकने के लिये टूथपेस्ट व माऊथ वॉश में प्रयोग किया जाता है।

इसका अधिक प्रयोग अल्जाइर्स, डिमेन्शिया और आई क्यू में कमी, टाइप टू मधुमेह, हाइपोथायरॉडिज्म जैसे कई रोगों का कारण बन सकता है। इसके अलावा फ्लोराइड की अधिक मात्रा हड्डियों की बीमारी आस्टियोपोसिस, दांतों की चमक घटने, हार्मोन असन्तुलन, डॉन्स सिन्ड्रोम, लीवर व किडनी की प्रतिरोधक क्षमता कम होने के अलावा हड्डियों के कैंसर के रूप में सामने आ सकती है।

फ्लोराइड खाने पीने की कई वस्तुओं में रहता है। इसकी मात्रा सेब के फ्लेवर्ड जूस में 1.09 पीपीएम, शीतल पेय में 0.60 पीपीएम, चॉकलेट में 0.23 पीपीएम, कॉफी में पीपीएम, हॉट डॉग में 0.48 पीपीएम होती है।

वैसे पेस्ट तो करना ही नहीं चाहिये, यदि आप शुद्ध सूखा मंजन कर सकें तो अच्छा है और आप टूथपेस्ट करते ही हैं तो जब बच्चे या आप ब्रश करें तो ध्यान रहे कि टूथपेस्ट मुंह में न जाये। अपनी सुरक्षा अपने हाथों में है।

— साभार आज का आनंद समाचार पत्र

सीताजी पर झूठा आरोप क्यों ?

जो जीव जैसे परिणाम रखता है उसे उन परिणामों का फल भोगना पड़ता है। आपको मालूम होगा कि भारत की महान सतियों में रामचन्द्र की पत्नी सीताजी का भी नाम आता है। राम जब १४ वर्ष का वनवास करके लौटे तो किसी ने सीताजी के चरित्र पर शंका की। जिसके कारण राम ने उन्हें छल से जंगल में छुड़वा दिया। सीताजी तो महान शीलवती नारी थीं और उन्होंने सपने में भी अपने पति के रूप में राम के अलावा किसी अन्य पुरुष की कल्पना तक नहीं की फिर भी उन शीलवती न होने का झूठा आरोप लगाया गया। आखिर क्यों ?

समवशरण में केवली परमात्मा से जब इसका कारण पूछा तो भगवान ने बताया कि सीताजी का जीव पूर्व में वेदवती के रूप में था। एक बार समीप के जंगल में दिगम्बर मुनिराज सुदर्शन का आगमन हुआ। उन मुनिराज की बहन भी आर्यिका थीं। वे आर्यिका माताजी महाराजश्री के पास बैठकर उपदेश सुन रहीं थीं। वेदवती ने यह देखकर गांव में प्रचार किया कि मैंने एक सुदर्शन मुनि को एक अकेली स्त्री के पास

बैठा देखा है। कई लोगों ने उसकी बातों का विश्वास कर लिया। तब मुनिराज ने प्रतिज्ञा की कि जब तक इस मिथ्या आरोप से मुक्त नहीं होऊँगा तक मैं आहार ग्रहण नहीं करूँगा।

तब एक देवी ने सारे गांव के सामने वेदवती के मुख से बुलवाया कि मैंने मुनिराज पर झूठा आरोप लगाया है, वे मुनिराज और आर्यिका दोनों भाई-बहिन हैं। बाद में वेदवती ने मुनिराज के पास क्षमायाचना की। मुनिराज ने वेदवती को क्षमा कर दिया और कल्याण का आशीर्वाद दिया।

सीताजी ने वेदवती के भव में निर्दोष मुनि की निन्दा की थी। इसी कार्य के कारण सीताजी पर मिथ्या आरोप लगा । बाद में मुनिराज से क्षमा मांग ली थी इस कारण उनका आरोप दूर हो गया था।

अतः इस प्रसंग से यह संदेश मिलता है कभी किसी पर किसी प्रकार का आरोप नहीं लगाना चाहिये।

- 'आत्मसाधिका' से साभार

मुक्तक

फूल खिलते हैं, झर जाते हैं।
जो यहाँ आते हैं, गुजर जाते हैं।
अमर रहते हैं मात्र वही मानव,
जो आत्म सागर में उतर जाते हैं।

चेतन को समवशरण का रास्ता बताइये

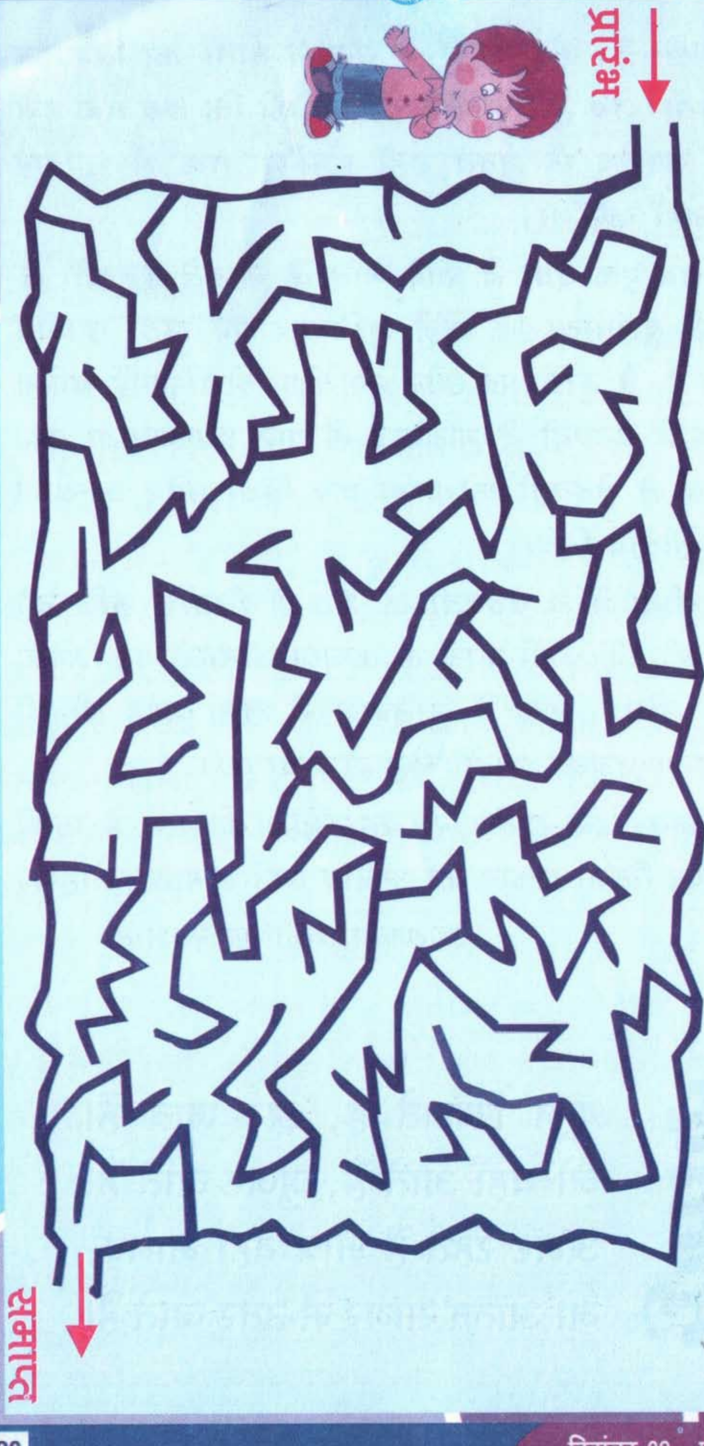

विश्वास

जब केवलज्ञानी भगवान की दिव्यध्वनि में ऐसा आया कि अनछने पानी की एक बूंद अनंत जीव होते हैं, आलू आदि जमीनकंद में अनंत जीव होते हैं तो हमें विश्वास नहीं होता। विज्ञान के अनुसार प्रत्येक मनुष्य के शरीर में 600 करोड़ कोशिकायें होती हैं, एक पिन की नोक के बराबर शरीर के भाग में 10 लाख कोशिकायें होती हैं और हमें इस कथन पर विश्वास हो जाता हैं। जिनवाणी जब जम्बूद्वीप, सुमेरु पर्वत आदि की बात कहती है तो हम सोचते हैं कि ऐसा होगा कि नहीं और 4 रू. के न्यूज पेपर में विश्व के कोने हुई घटनाओं के समाचार पर आसानी से विश्वास होता है। जब न्यूज पेपर में आता है कि कोई व्यक्ति चन्द्रमा से होकर आया है हम उस पर प्रश्न चिन्ह नहीं लगाते। आश्चर्य है कि हम सामान्य व्यक्तियों की सच्ची-झूठी बातों पर तो विश्वास कर सकते हैं परन्तु हमें तीन लोक के ज्ञाता सर्वज्ञ भगवंतो के कथनों पर शंका होती है। कहाँ केवलज्ञान का अनंत ज्ञान और कहाँ हमारा अल्प ज्ञान - फिर भी शंका......।

आम से अच्छा कोई फल नहीं होता, गुलाब से अच्छा कोई फूल नहीं होता,
और कितना बताऊँ मेरे मित्रो कि, जैन धर्म से बड़ा कोई धर्म नहीं होता॥

इन पक्तियों में पांच प्राचीन विद्वानों के नाम खोजिये-

1. यह राज्य, भोग और दौलत रामचन्द्रजी त्यागकर मुनि बन गये।
2. ज्ञानियों के लिये यह राज मल के समान है।
3. अरे भाई बनारसी! दासपना छोड़ो, तुम तो स्वयं अनंत गुणों से परिपूर्ण भगवान हो।
4. जय जय जय जय चन्द्रप्रभु भगवान की।
5. आत्माराम, पूर्णचन्द्र और द्यानत रायस्वामी के पास जाकर जिनवाणी लेकर गये ।

ये अक्षर उल्टे सीधे हो गये इनमें एक ग्रन्थ का नाम छुपा हुआ है इन्हें खोजिये.

1. RSAMYA AS - SAMAYSAR
2. LHCHAEHAD - ....
3. RADVAYRA-SARTNGH ....
4. RTTTHAAV-TSRUA- ....
5. UPAAPMDANR- ....
6. VHRASIANH-NURPA - ....

ये कैसा नया वर्ष

- पापा मुझे 200 रु. चाहिये।
- पर क्यों बेटा ?
- पापा! प्लीज। ये मत पूछिये। बस आप तो रुपये दे दीजिये।
- बेटा! रुपये तो मैं तुमसे 200 नहीं 500 दे दूंगा। मगर मुझे मालूम तो पड़े मेरा बेटा कौन से महान कार्य के लिये जा रहा है।
- पापा! आप मेरे अच्छे पापा नहीं हैं क्या ?
- बेटा! तुम्हें 200 रु. दे दूंगा तो मैं अच्छा हो जाऊँगा। इसका मतलब मेरी कीमत रुपये देने से है।

(इतने में पार्थ के सारे दोस्त उसे बुलाने आये। परन्तु पार्थ और उसके पापा की बातें हो रहीं थीं तो दरवाजे पर खड़े होकर सुनने लगे।)

- पापा! ऐसी बात नहीं है।
- देखो पार्थ ! बात 200रु. या 500 रु. की नहीं है। बात उसके उपयोग की है।
- पापा! छोटी सी बात है। मेरे सारे दोस्त मिलकर 31 दिसम्बर को नये वर्ष की पार्टी कर रहे हैं तो हम सब मिलकर एन्जॉय करेंगे।
- अच्छा तो इतनी सी बात तुम मुझसे छुपा रहे थे।
- पापा छुपा नहीं रहा था। कहने में संकोच लग रहा था।
- अच्छा तो ये बताओ कि पार्टी में क्या होगा ?
- पार्टी में डांस करेंगे, खायेंगे, मस्ती करेंगे, नया वर्ष सेलीब्रेट करेंगे।
- पार्थ ! तुम अब 10वीं क्लास में आ गये हो और समझदार भी हो । मैं तुम्हें 500 रुपये दूंगा मगर मेरी बात ध्यान से सुनो और मेरे प्रश्नों का उत्तर सोचकर देना।

(पार्थ ने सोचा कि अब तो 500 रु. मिलेंगे तो पापा की बातें सुनने में कोई परेशानी है। अब तो मजा आ जायेगा।)

- हाँ हाँ पापा ! बोलिये ना।
- पार्थ ! तुम्हें ऐसा लगता है कि पिछले साल में कोई ऐसा कार्य विश्व में, देश में, समाज में या परिवार में हुआ है जिसकी तुम्हें विशेष प्रसन्नता हो
- नहीं पापा ! ऐसा तो कुछ भी नहीं है।
- अच्छा कुछ ऐसा हुआ कि जिससे लोगों की समस्यायें बढ़ी हों।
- मुझे ऐसा कुछ याद नहीं है।
- मैं बताता हूँ। 26 नवम्बर 2008 को मुम्बई में आतंकवादियों ने हमला किया और 166 व्यक्तियों की मौत हो गई, सैकड़ों घायल हो गये। मरने वाले व्यक्तियों के परिवार वाले आज हर क्षण आंसू बहा रहे हैं। किसी का भाई मरा, किसी के पिता। किसी का पैर कटा, तो किसी का हाथ। लगभग 1000 करोड़ का नुकसान हुआ, सुरक्षा के लिये देश के अरबों रुपये बरबाद हो रहे हैं। आज भी देश पर हर क्षण आतंकवादियों का खतरा है। मंहगाई बढ़ गई, अपराध बढ़ गये, जयपुर में पेट्रोल डिपो में आग लग गई 1500 करोड़ रुपये का नुकसान हो गया, रेल दुर्घटना में कई लोग मारे गये, देश में कई जगह विस्फोट हुये जिसमें कई लोग मारे गये। आज देश में कई समस्यायें हैं।
- लेकिन पापा ! इससे हमें क्या ? हम तो सुरक्षित हैं ना।
- तो क्या किसी दुर्घटना की प्रतीक्षा कर रहे हो ?
- ऐसी बात नहीं है पापा।
- क्या देश की समस्यायें हमारी समस्यायें नहीं हैं? यदि हमें देश की समस्याओं के प्रति इतनी भी संवेदना नहीं हैं तो हम क्या सच्चे नागरिक कहलायेंगे ?
- पापा ! इन सब बातों से नये वर्ष का क्या मतलब है ?
- मतलब है बेटा ! अच्छा मुझे ये बतलाओ कि नये वर्ष में किस बात की खुशी मनाओगे।
- पापा ! ये तो मात्र मनोरंजन है। नये वर्ष को सारी दुनिया सेलिब्रेट करती है।
- दुनिया की अधिकांश जनता क्रिसमिस और ईद भी मनाती है तो क्या तुम भी मनाओगे ? मैं मनोरंजन करने के लिये मना नहीं कर रहा। लेकिन

हम जो कार्य करें उसकी उपयोगिता पूछ रहा हूँ। किस बात की खुशी है ? क्या हमारे अंदर के राग-द्वेष कम हुये, हमारी कषायें कम हुईं, क्या हमारे परिवार या समाज की समस्यायें कम हुईं ?क्या हमने किसी ग्रन्थ का स्वाध्याय पूरा किया? आखिर ऐसा क्या हुआ कि हम नया वर्ष सेलीब्रेट करें ?

- पापा ! ऐसा तो कुछ नहीं हुआ।
- तो नये वर्ष के नाम पर नाचना-कूदना, मस्ती करना, गंदी-गंदी बातें करना, खाना-पीना कहाँ तक सही है और हमारा नया वर्ष तो दीपावली के तुरन्त बाद प्रारंभ हो जाता है। तुम्हारा तरीका तो पाश्चात्य संस्कृति है।
- तो नये वर्ष पर हम शांत बैठे रहें।
- पार्थ बेटा ! तुम्हें यदि नया वर्ष मनाना ही है तो उसे धार्मिक रूप से मनाओ। तीर्थ यात्रा करो, जिनमंदिर में विधान करो, साहित्य वितरण करो, अनाथ आश्रम में जाकर कपड़े और फल दो। नाच-गान से तो पाप ही मिलेगा।
- वाह पापा। यू आर ग्रेट। लेकिन पापा मेरे दोस्त क्या सोचेंगे ....!
- हम कुछ नहीं सोचेंगे। (सारे दोस्त दरवाजे से अंदर आते हुये बोले।)
- अरे तुम लोग यहाँ कैसे....................!
- हम लोग दरवाजे पर खड़े हुये आप लोगों की बातें सुन रहे थे। अंकल ने नये वर्ष मनाने का सुन्दर तरीका सिखाया है। हम तो अब ऐसा ही नया वर्ष मनायेंगे। (पार्थ का एक दोस्त बोला)
- वाह मेरे बच्चो! आज तुम ने एक बाप का दिल जीत लिया। ये लो 1000 रु. और सारी समाज को और अपने अन्य दोस्तों के आदर्श बनो और बताओ कि नया वर्ष कैसे मनाया जाता है। (पापा ने प्रसन्न होकर कहा)
- थैंक्यू अंकल। थैंक्यू पापा। यू आर ग्रेट।

नव वर्ष का अभिनंदन
श्री जिनेन्द्र चरणों में वंदन

खर्च

अरे बेटे तूने कल ही पांच रुपये मांगे थे और आज फिर पांच रुपये मांग रहा है।

हाँ पिताजी! वे सब खर्च हो गये। आज और दे दीजिये अब आगे चार दिन तक पैसा नहीं मांगूगा।

पिता ने पांच रुपये दे दिये और अपने एक खास नौकर से कहा – तुम मेरे बेटे के पीछे जाओ और देखना यह रुपये कहाँ खर्च करता है ?

घर से थोड़ी दूर निकलने के बाद उस बालक ने एक कच्चे मकान से अपने दोस्त को बुलाया। दोनों एक साथ एक पुस्तक की दुकान पर गये और उस दोस्त को पांच रुपये की पुस्तक दिलाते हुये वह बालक बोला – कल और आज की इन दस रुपयों की पुस्तकों से तेरी पढ़ाई की व्यवस्था हो जायेगी।

यही बालक चितरंजनदास बड़ा होने पर देशबन्धु के नाम से विख्यात हुआ।

अभिमान का फल

एक कुष्ठ रोग का रोगी एक चौराहे पर हाथ फैलाये भीख मांग रहा था। एक युवक के 10 रुपये देकर उससे पूछा – कि तुम्हारा सारा शरीर गल रहा है फिर क्यों इतना कष्ट करके जीवन जी रहे हो ? रोगी ने उत्तर दिया कि पहले मैं बहुत सुन्दर था और मुझे अपनी सुन्दरता पर बहुत अभिमान था। मैं अपना अधिंकाश समय इसकी सेवा में लगाता था। बाद में मुझे कुष्ठ रोग हो गया। मित्र! यह मेरे अभिमान का फल था। मैं इसलिये जीवन जी रहा हूँ कि लोग मुझे देखकर शरीर के अभिमान का त्याग करें।

मिलावट का व्यापार

— एक झलक

आपने पिछले अंक में पढ़ा कि धन के लालच में अपराधी व्यापारियों के साथ मिलकर पूरे देश में खाने की नकली वस्तुयें बना रहे हैं और मिलावटी सामग्री मिलाकर लोगों के जीवन नष्ट करने में संकोच नहीं कर रहे हैं। पिछले 3 माह से अनेक समाचार टी.वी. चैनलों और विभिन्न समाचार पत्रों के द्वारा अभियान चलाया जा रहा है। जिसके कारण अनेक शहरों में सरकारी अधिकारियों के द्वारा अनेक व्यपारियों को नकली सामान बनाते हुये अथवा बेचते हुये पकड़े गये।

मध्यप्रदेश के इंदौर, जबलपुर, शाजापुर में – 8000 किलो नकली मावा, शिवपुरी में 10 क्विंटल नकली मावा, उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर में 1500 किलो नकली पनीर, शामली में मिलावटी सरसों तेल, मनोरमा फूड्स कपंनी द्वारा बनाया गया 3 करोड़ का नकली घी, बुलंद शहर में नकली साबुन की फैक्ट्री, एटा में 200 किलो घी, और 300 लीटर दूध, 1300 लीटर सिथेंटिक तेल, 1200 किलो मावा, मेरठ में 900 किलो मावा, बुलंदशहर में 460 किलो नकली

सोनपपड़ी, मेरठ में 900 किलो नकली घी, गाजियाबाद में 1500 किलो नकली मावा, 30 लोगों को पशुओं की चर्बी के साथ पकड़ा गया, मथुरा में 3400 किलो नकली घी, बदायूं में नकली पनीर, बरेली में 600 किलो नकली पनीर, 200 किलो नकली क्रीम, इलाहाबाद के मीरापुर में 7114 किलो नकली मावा और 9500 किलो नकली क्रीम, 300 किलो मिठाई पकड़ी गई, बस्ती में 1.5 लाख रु. के मूल्य वाले 1000 किलो नकली मावे को पकड़ा गया, बिजनौर में 800 किलो मावा, राजस्थान के जयपुर में 35 हजार लीटर नकली घी, 18 हजार लीटर नकली दूध और 200 लीटर घी पकड़ा गया है। अभी 8 नवम्बर को 2000 किलो नकली घी पकड़ा गया। उत्तराखंड के उधमसिंह नगर में 800 किलो नकली मावा पकड़ा गया। दिल्ली में एक फैक्ट्री में घटिया सूजी, सस्ता वाला दूध पाऊडर और केमिकल मिलाकर मिल्क केक बनाया जा रहा था। स्थानीय व्यपारियों को 255 रु.किलो का मिल्क केक मात्र 50 रू.किलो में उपलब्ध करवाया जा रहा था, इसके साथ ही 400 क्विंटल मिठाई को जब्त किया गया। मुम्बई के भायखला में 7600 किलो नकली मावा। पंजाब में नकली मावा पकड़े जाने पर लुधियाना और फिरोजपुर में मावा की बिकी पर रोक लगा दी गई। हरियाणा के अंबाला में 100 किलो नकली घी पकड़ा गया।

इस तरह आपको अनुमान हो गया होगा कि किस तरह से पूरे देश में मिलावट का व्यापार किया जा रहा है। घी में पशुओं की चर्बी मिलाई जा रही है। बाजार में कुछ भी खाने से पहले कई बार सोचें। आपका जीवन आपके हाथों में है। स्वयं विचार करें।

राजकुमार सम्प्रति

पाटलीपुत्र में राजा अशोक राज्य करता था। अशोक का पुत्र कुणाल उज्जैनी में रहता था। जब वह आठ वर्ष का हुआ तो सम्राट अशोक ने पत्र लिखा। उस पत्र में लिखा-अधीयताम् कुमारम् अर्थात् कुमार को पढ़ाओ। कुणाल की सौतेली माता पास ही खड़ी थी उसने वह पत्र देखने के लिये मांग लिया और सलाई में थूक लगाकर 'अ' पर बिन्दु लगा दी। इस तरह अधीयताम् से अंधीयताम् हो गया अर्थात् कुमार को अंधा कर दो। सौतेली माता ने वह पत्र राजा को वापस कर दिया।

राजा का मन कहीं और था तो उसने बिना पढ़े वह पत्र मुहर बन्द करवाकर कुमार के लिये उज्जैनी भिजवा दिया।

पत्रवाचकों ने पत्र पढ़ा। कुमार ने पूछा कि मेरे पिता ने पत्र में क्या लिखा है तो वे चुप हो गये। बार-बार पूछने पर सेवकों ने बताया कि पत्र में लिखा है कि आपको अंधा कर दिया जाये। कुमार बोला - हम मौर्य वंश के हैं। हमारे कुल में गुरुजनों और पिता की आज्ञा प्राण की कीमत पर भी पाली जाती है। इसके बाद कुमार ने गर्म सरिया से अपने आंखें फोड़ लीं। सम्राट अशोक यह समाचार सुनकर अत्यंत दु:खी हुये। सम्राट ने दु:खी मन से उज्जैनी का राज्य दूसरे पुत्र को दे दिया और कुणाल को एक गांव दे दिया। बाद में कुणाल ने विवाह किया, उसको एक पुत्र की प्राप्ति हुई। कुणाल गायन कला में

अत्यंत होशियार था। वह गांव-गांव घूमने लगा। एक बार वह घूमता हुआ पाटलीपुत्र आया। राजा को मालूम हुआ कि एक अंधा गन्धर्व आया है जो गाने में अत्यंत कुशल है। राजा ने उसे बुलवाया।

कुणाल ने पर्दे के पीछे से गीत गाया और अपनी गायन कला से राजा को प्रसन्न कर दिया। तब राजा ने पूछा - मांगो क्या मांगते हो ?

कुणाल ने उत्तर दिया - चन्द्रगुप्त मौर्य का पौत्र और सम्राट अशोक का पुत्र कौड़ी मांगता है।

राजा ने पूछा - तुम कौन हो ?

कुणाल ने कहा - आपका पुत्र।

राजा ने परदा हटाकर उसे गले लगा लिया और बोले क्या तुम कौड़ी के भी योग्य नहीं हो जो तुम कौड़ी मांग रहे हो ?

मंत्रियों ने कहा - राजपुत्रों के लिये राज्य ही कौड़ी है।

राजा बोला - अंधे होकर तुम राज्य कैसे करोगे ?

मेरा एक पुत्र है- कुणाल ने कहा।

सम्राट ने पूछा - कब हुआ ? कुणाल ने कहा- वह सम्प्रति (अभी) ही हुआ है। सम्राट ने उसका नाम सम्प्रति रखा और उसे लाने की आदेश दिया।

सम्प्रति ने जैन धर्म का उतना ही प्रचार किया था जितना अशोक ने बौद्ध धर्म का। उसके द्वारा बनवाये अनेक जैन स्तूप अशोक के द्वारा बनवाये गये मान लिये जाते हैं।

मुक्तक

मश्दुता लोहे को शीशा बना देती हैं।
क्षमा हैवान को भगवान बना देती हैं।
अंहकार के महल से मत झांकों मेरे यार,
कषायें इन्सान को शैतान बना देती हैं।।

परिणामों की विचित्रता

सिद्धार्थ नगरी के महाराज क्षेमंकर और महारानी विमला ने अपने दोनों पुत्रों देशभूषण और कुलभूषण को विद्या अध्ययन के लिये आश्रम भेज दिया। उन दोनों ने अपने गुरु सागरघोष के अनुशासन में रहकर विनयपूर्वक सभी विद्यायें सीख लीं और चौदह वर्षों के लम्बे समय के बाद दोनों अपने राज्य वापस चल दिये।

सम्पूर्ण कलाओं में पारंगत अपने राजकुमारों के राज्य वापस आने की खुशी में राजधानी को दुल्हन की तरह सजाया गया।

राजकुमारी कमलोत्सवा अपने भाईयों का स्वागत करने के लिये हाथ में आरती का थाल लिये हुये खड़ी थी। समस्त कलाओं में पारंगत अपने भाईयों को देखकर बहुत खुश हो रही थी। जैसे-जैसे राजकुमारों का रथ आगे बढ़ रहा था, नगरवासी राजकुमारों पर फूलों की वर्षा कर रहे थे। लोग अपने राजकुमारों को देखने के लिये उत्सुक हो रहे थे।

राजकुमारी कमलोत्सवा अपने महल की छत पर खड़ी उनके पास आने की प्रतीक्षा कर रही थी। कमलोत्सवा को राजकुमार नहीं जानते थे। दोनों राजकुमारों ने कमलोत्सवा को देखा तो उसके अत्यंत सुन्दर रूप को देखकर मोहित हो गये। दोनों भाईयों में विवाद हो गया कि इस युवती के साथ विवाह कौन करेगा ? दोनों की तलवारें निकल गईं और लड़ने के लिये तैयार हो गये। सभी आश्चर्यचकित हो गये कि ये अचानक क्या हो गया ? तभी राजकुमारी अपने भाईयों की आरती उतारने के लिये

मुस्कराती हुई उन दोनों के सामने आकर खड़ी हो गई। तभी सेवकों ने दोनों राजकुमारों और राजकुमारी कमलोत्सवा की जय जयकार की। दोनों भाइयों ने मंत्री की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा कि ये सुन्दर युवती कौन है? तब मंत्री ने बताया कि यह आपकी छोटी बहन कमलोत्सवा है। यह आप दोनों को पहली बार देखकर इतनी प्रसन्न है मानों किसी निर्धन व्यक्ति को हीरा मिल गया हो। इसका जन्म आपके आश्रम जाने के बाद हुआ था इसलिये इसे आपने नहीं देखा।

दोनों भाईयों ने एक दूसरे को देखा और लज्जा के कारण अपनी आंखें नीचे कर लीं और सोचने लगे कि धिक्कार है हमें, जिन्होंने अपनी सगी बहिन के लिये ऐसे विचार किये। इसके मोह में ऐसे पागल हो गये कि एक दूसरे से लड़ने तैयार हो गये। हे भगवान! ऐसे परिणामों को धिक्कार है।

दोनों भाई शांत भाव से विचार कर रहे थे। तभी बहन ने आरती उतारने के बाद कहा कि भैया! अब आप महल में प्रवेश कीजिये। तब कुलभूषण ने कहा कि बहन! महल में तो हम जायेंगे परन्तु ईंट–पत्थर के महल में नहीं अपने चैतन्य महल में। जिस ईंट पत्थर के महल के प्रवेश द्वार पर ही मोह के सर्प ने डस लिया हो उस महल के अंदर क्या होगा ?

कमलोत्सवा ने कहा कि भैया! आप ये कैसी बातें कर रहे हैं ? मुझे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा।

देशभूषण ने कहा कि बहन! ये मत पूछो। अब हम वीतरागी गुरु की शरण में जायेंगे। इतना कहकर वे दोनों दीक्षा लेने के लिये वन की ओर चले गये और राज्य का हर्ष का उत्सव दु:ख में बदल गया।

संकलन – स्वस्ति जैन, देवलाली

आपके प्रश्न हमारे उत्तर

प्रश्न -1. क्या निगोद से निकलकर जीवे सीधे मनुष्य पर्याय प्राप्त हो सकती है ?

-विजय शाह, मुंबई

उत्तर - हाँ निगोद से निकलकर जीव सीधे मनुष्य पर्याय प्राप्त कर सकता है।

प्रश्न -2. क्या मुनिराज कच्चे नारियल का पानी ले सकते हैं ?

-दीप्ति जैन, दिल्ली

उत्तर - नहीं।

प्रश्न-3. क्या जिनागम गणधराचार्य, एलाचार्य नाम के कोई पद हैं ?

-प्रमोद जैन, सिहोरा

उत्तर - गणधर तीर्थंकर के ही होते हैं और मनःपर्यय ज्ञान के धारी और द्वादशांग के पाठी होते हैं। ये पद नहीं योग्यता है। जिनागम में ऐलक का उल्लेख है, ऐलाचार्य कुन्दकुन्द आचार्य को एक घटना के कारण कहा जाता है।

आपके ब्रश से

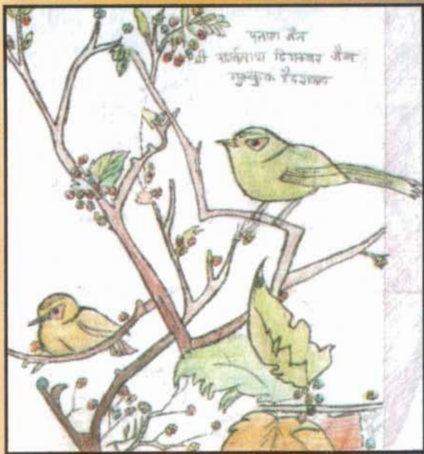

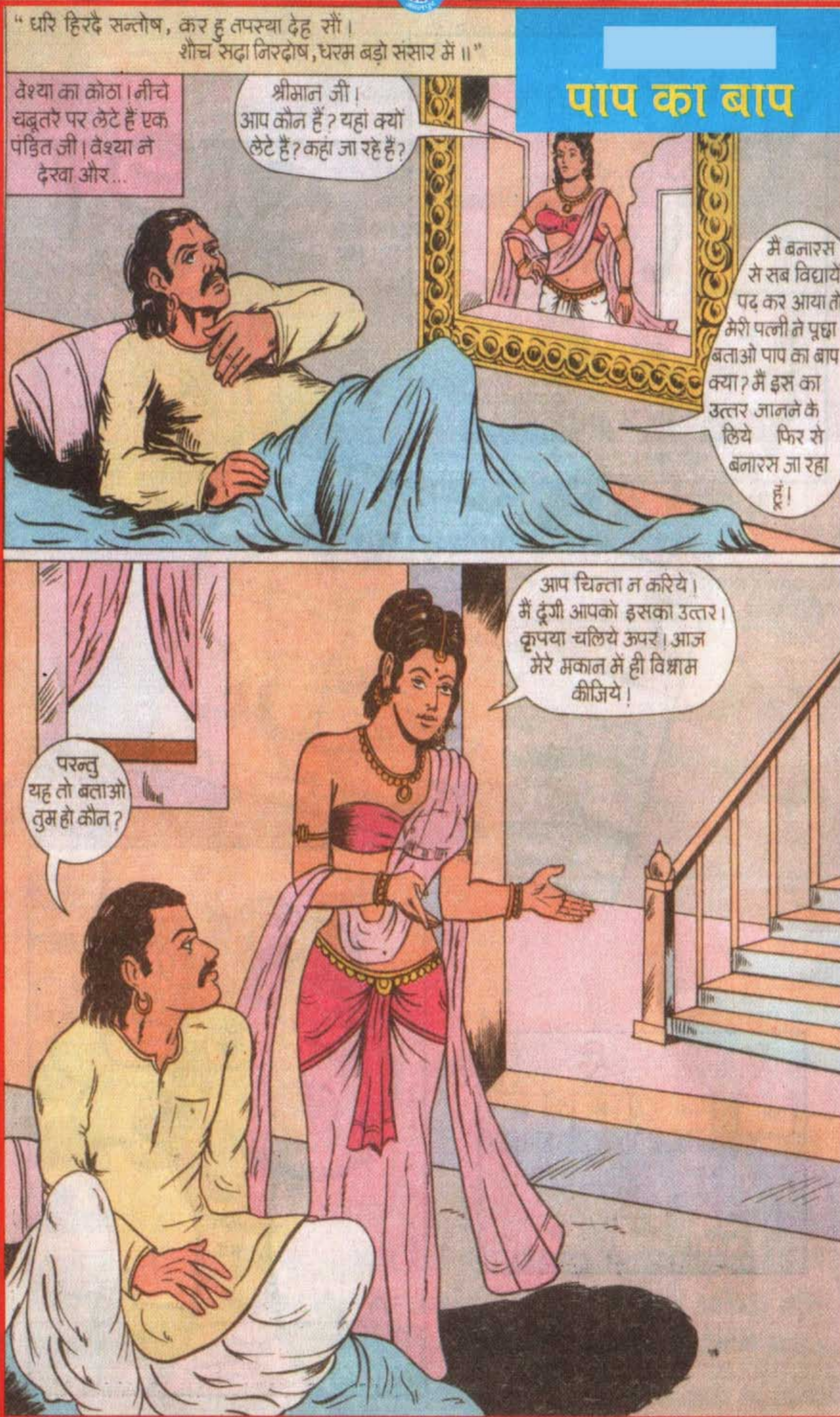
" धरि हिरदै सन्तोष, कर हु तपस्या देह सौं।
शौच सदा निरदोष, धरम बड़ो संसार में ॥"
पाप का बाप
वेश्या का कोठा। नीचे चबूतरे पर लेटे हैं एक पंडित जी। वेश्या ने देखा और...
श्रीमान जी। आप कौन हैं? यहां क्यों लेटे हैं? कहां जा रहे हैं?
मैं बनारस से सब विद्यायें पढ़ कर आया तो मेरी पत्नी ने पूछा बताओ पाप का बाप क्या? मैं इस का उत्तर जानने के लिये फिर से बनारस जा रहा हूं!
आप चिन्ता न करिये। मैं दूंगी आपको इसका उत्तर। कृपया चलिये ऊपर। आज मेरे मकान में ही विश्राम कीजिये!
परन्तु यह तो बताओ तुम हो कौन?

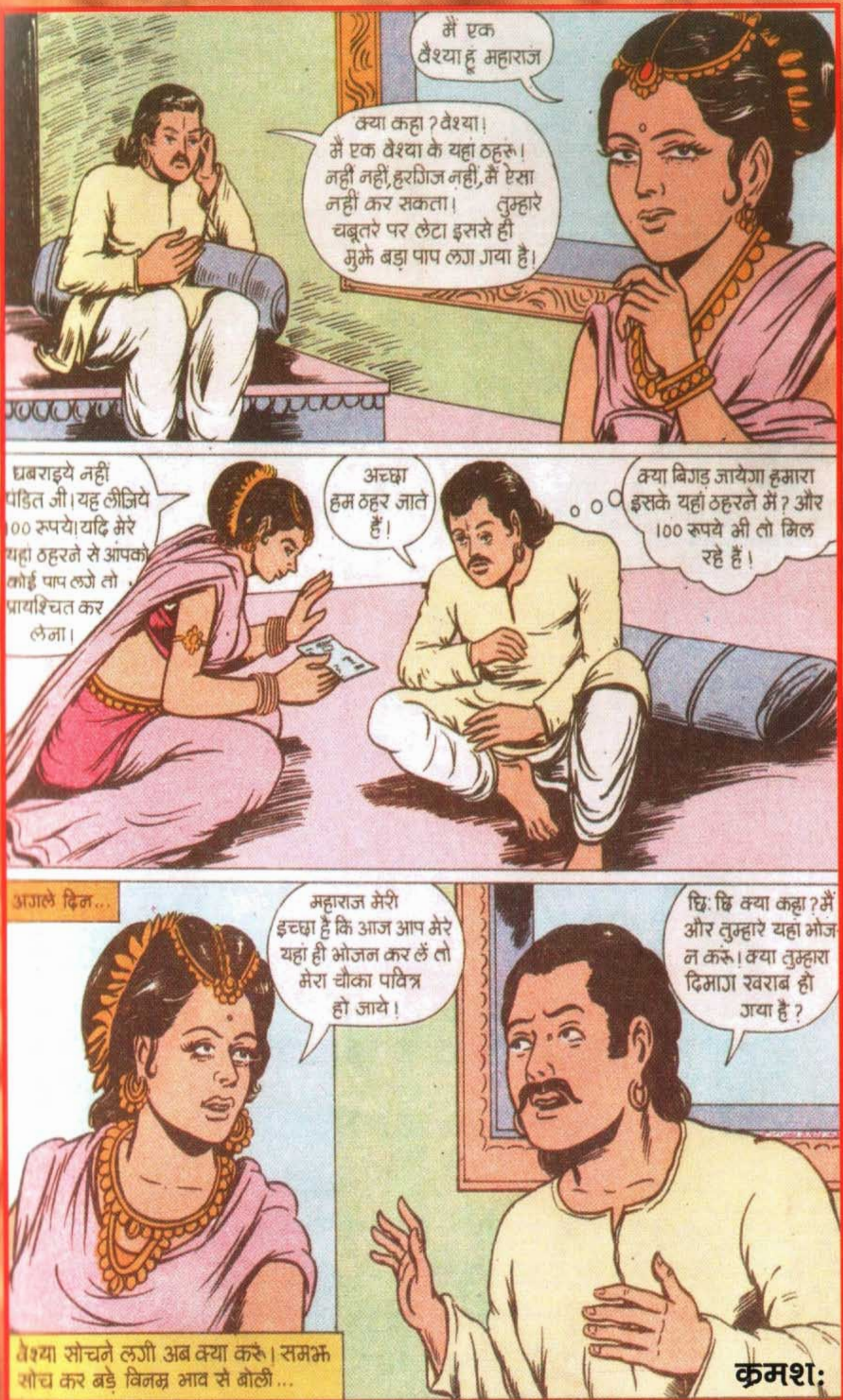

मैं एक वैश्या हूं महाराज
क्या कहा ? वेश्या। मैं एक वैश्या के यहां ठहरूं। नहीं नहीं, हरगिज नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता। तुम्हारे चबूतरे पर लेटा इससे ही मुझे बड़ा पाप लग गया है।
घबराइये नहीं पंडित जी। यह लीजिये 100 रूपये। यदि मेरे यहां ठहरने से आंपको कोई पाप लगे तो प्रायश्चित कर लेना।
अच्छा हम ठहर जाते हैं।
क्या बिगड़ जायेगा हमारा इसके यहां ठहरने में ? और 100 रूपये भी तो मिल रहे हैं।
अगले दिन...
महाराज मेरी इच्छा है कि आज आप मेरे यहां ही भोजन कर लें तो मेरा चौका पवित्र हो जाये।
छिः छि क्या कहा ? मैं और तुम्हारे यहां भोजन करूं। क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है ?
वेश्या सोचने लगी अब क्या करूं। समझ सोच कर बड़े विनम्र भाव से बोली...
क्रमशः